तथेव पुण्णपातियो, अञ्ञायं वत्तते कथा। आकारकेन जानामि, न चायं भद्दिका सुराति॥

तत्थ **तथेवाति** यथा मया गमनकाले दिट्ठा इदानिपि इमा सुरापातियो तथेव पुण्णा। **अञ्ञायं वत्तते कथाति** या अयं तुम्हाकं सुरावण्णनकथा वत्तति, सा अञ्ञाव अभूता अतच्छा यदि हि एसा सुरा मनापा अस्स तुम्हेपि पिबेय्याथ उपड्ढपातियो अवसिस्सेय्युं। तुम्हाकं पन एकेनापि सुरा न पीता। **आकारकेन जानामीति** तस्मा इमिना कारणेन जानामि। **न चायं भद्दिका सुराति** नेव अयं भद्दिका सुरा, विसयोजिताय एताय भवितब्बन्ति। धुत्ते गहेत्वा यथा न पुन एवरूपं करोन्ति तथा ते तज्जेत्वा विस्सज्जेसि। सो यावजीवं दानादीनि पुञ्ञानि करित्वा यथाकम्मं गतो।

सत्था इमं धम्मदेसनं आहरित्वा जातकं समोधानेसि। तदा धुत्ता एतरहि धुत्ता बाराणसीसेट्ठि पन अहन्तेन समयेनाति।

पुण्णपातिजातकं

●

४. फलजातकं

नायं रुक्खो दुरारूहोति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो एकं फलकुसलं उपासकं आरब्भ कथेसि।

पच्चुपन्नवत्थु

एको किर सावत्थिवासी कुटुम्बिको बुद्धपमुखं संघं निमन्तेत्वा अत्तनो आरामे निसीदापेत्वा यागुखज्जकं दत्वा उय्यानपालं आणापेसि–भिक्खूहि सद्धिं उय्याने विचरित्वा अय्यानं अम्बादीनि नानाफलानि देहीति। सो साधूति सम्पटिच्छित्वा भिक्खुसंघं आदाय उय्याने विचरन्तो रुक्खं ओलोकेत्वाव एतं फलं आमं एतं न सुपक्कं एतं सुपक्कन्ति जानाति। यं सो वदति तं तथेव होति।

मदिरा-पात्र जैसे पहले थे उसी प्रकार भरे पड़े हैं (जैसे पहले रहे) मदिरा की यह प्रशंसा (=कथा) अन्य ही प्रयोजन (अर्थ) से है। मैं रंग-ढंग से (आचरण) जानता हूँ कि यह मदिरा अच्छी नहीं है।

तथेवाति–मैंने इन्हें जैसा जाते समय देखा, यह मदिरा-पात्र, अब भी उसी प्रकार भरे पड़े हैं। **अञ्ञायं वत्तते कथाति**–मदिरा-प्रशंसा की यह बात है, वह अन्य है–असत्य है–झूठ है। यदि यह अच्छी होती, तो तुम पीते भी, (केवल) अर्द्धपात्र भर शेष बचतीं। लेकिन तुममें से किसी एक ने भी मदिरा नहीं पी। **आकारकेन जानामीति**–यह मैं इस बात से जानता हूँ। **न चायंभद्दिका सुराति**–यह मदिरा अच्छी नहीं, इसमें विष मिला हुआ होगा।

इस प्रकार धूर्तों को ले, जिसमें वह फिर वैसा उस प्रकार आचरण न करें, उनको धमकाकर, छोड़ दिया। वह जीवन रहते, दानादि पुण्य करके यथा-कर्म (परलोक) गया।

बुद्ध ने यह धर्मदेशना कह, जातक का तात्पर्यार्थ उपस्थित किया। उस समय के धूर्त (अब के) धूर्त थे। लेकिन उस समय वाराणसी का सेठ मैं ही था।

पुण्णपाति जातक

●

५४. फल जातक

'नायं रुक्खो दुरारूहोति....', यह गाथा, बुद्ध ने जेतवन में विहार करते समय, एक फल-कुशल (फल के जानकार) के सम्बन्ध में कही।

क. वर्तमान कथा

एक श्रावस्ती-वासी गृहस्थ ने, बुद्ध-प्रमुख भिक्षु-संघ को निमंत्रित कर, अपने आराम में बिठा, यवागु-खाजा दे, (अपने) माली को आज्ञा दी, कि वह भिक्षुओं के साथ बाग में घूम, उन आर्य्यों को आम आदि नाना प्रकार के फल दे। वह 'अच्छा' (कह) स्वीकार कर, भिक्षु-संघ को साथ ले, उद्यान में विचरते हुए, वृक्ष को देख कर ही जान लेता है कि यह कच्चा–

भिक्खू गन्त्वा तथागतस्स आरोचेसुं-भन्ते! अयं उय्यानपालो फलकुसलो। भूमियं ठितोव रुक्खं ओलोकेत्वा एतं फलं आमं एतं न सुपक्कं एतं सुपक्कन्ति जानाति। यं सो वदति तं तथेव होतीति। सत्था-न भिक्खवे! अयमेव उय्यानपालो फलकुसलो पुब्बे पन पण्डितापि फलकुसला अहेसुन्ति वत्वा अतीतं आहरि-

अतीतवत्थु

अतीते बाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो सत्थवाहकुले निब्बत्तित्वा वयप्पत्तो पञ्चहि सकटसतेहि वणिज्यं करोन्तो एकस्मिं काले महावत्तनिअटविं पत्वा अटविमुखे ठत्वा मनुस्से सन्निपातापेत्वा-इमिस्सा अटविया विसरुक्खा नाम होन्ति विसपत्तानि विसपुप्फानि विसफलानि विसमधूनि होन्ति येव। पुब्बे तुम्हेहि अपरिभुत्तं यं किञ्चि पत्तं वा पुप्फं वा फलं वा मं अनापुच्छित्वा मा खादित्थाति आह। ते साधूति सम्पटिच्छित्वा अटविं ओतरिंसु।

अटविमुखे च एकस्मिं गामद्वारे किम्फलरुक्खो नाम अत्थि। तस्स खन्धसाखापलासपुप्फफलानि सब्बानि अम्बसदिसानेव होन्ति, न केवलं वण्णसण्ठानतो गन्धरसेहिपिस्स आमपक्कानि फलानि अम्बफलसदिसानेव। खादितानि पन हलाहहविसं विय तं खणं येव जीवितक्खयं पापेन्ति। पुरतो गच्छन्ता एकच्चे लोलपुरिसा अम्बरुक्खो अयन्ति सञ्ञाय फलानि खादिंसु। एकच्चे सत्थवाहं पुच्छित्वा व खादिस्सामाति हत्थेन गहेत्वा अट्ठंसु। ते सत्थवाहे आगते-अय्य! इमानि अम्बफलानि खादामाति पुच्छिंसु। बोधिसत्तो नायं अम्बरुक्खोति ञत्वा-किम्फलरुक्खो नामेस नायं अम्बरुक्को मा खादित्थाति-वारेत्वा ये खादिंसु तेपि वमापेत्वा चतुमधुरं पायेत्वा आरोगे अकासि।

फल है, यह अच्छी तरह पका नहीं, यह अच्छी तरह पका है। जिसे वह जैसा कहता, वह वैसा ही निकलता। भिक्षुओं ने जाकर तथागत से निवेदन किया-"भन्ते! यह माली फल (पहचानने में) दक्ष है। पृथ्वी पर खड़े-ही-खड़े वृक्ष को देख कर ही, 'यह फल कच्चा है, यह अच्छी तरह पका नहीं, यह अच्छी तरह पका है, जान लेता है।' जिसे, वह जैसा कहता है, वह वैसा ही निकलता है।" बुद्ध ने, 'हे भिक्षुओं! केवल यह माली ही फल (पहचानने में) दक्ष नहीं, पुर्व समय में पण्डित (जन) भी फल (पहचानने में) दक्ष थे' कह, पूर्व-कथा कही-

ख. अतीत कथा

पूर्व समय में **वाराणसी**-नरेश (राजा) **ब्रह्मदत्त** के राज्य करते समय, बोधिसत्त्व (एक) श्रेष्ठी-कुल में उत्पन्न हो, आयु-प्राप्त होने पर, पाँच सौ गाड़ियाँ ले, वाणिज्य करते हुए, एक समय महामार्ग से वन-प्रदेश में पहुँच (जंगल के) मुख-द्वार पर खड़े हो, सभी मनुष्यों को एकत्रित करवा-'इस वन में विष-वृक्ष; विष-पुष्प, विष-फल तथा विष-मधु होते हैं। यदि कोई ऐसा पत्र, फूल या फल हो, जिसे तुमने पहले न खाया हो, उसे मुझसे पूछे विना मत खाना,' कहा। वह 'अच्छा' (कह) स्वीकार कर वन में प्रविष्ट हुए।

वन प्रान्त में प्रविष्ट होते ही, एक ग्राम-द्वार पर एक किम्फल नामक वृक्ष था। उस (वृक्ष) के तने, शाखा, पत्ते, फूल, फल, सब आम के समान, न केवल रंग और आकार में, किन्तु गन्ध और रस में भी; (इस वृक्ष के) कच्चे-पक्के फल, आम के फल-सदृश ही थे। लेकिन खाने पर हलाहल विष की भांति, तत्काल प्राणों का नाश कर देते थे।

आगे-आगे जानेवाले कुछ लोभी पुरुषों ने 'यह आम के वृक्ष हैं' समझ, फल खाये। कुछ ने 'कारवाँ (दल) के सरदार से पूछकर खायेंगे' हाथ में लिये खड़े रहे। उन्होंने सार्थवाह (कारवाँ के सरदार) के आने पर-'आर्य! इन आम के फलों को खायें ?' पूछा। बोधिसत्त्व ने यह जान कि यह आम का वृक्ष नहीं है, 'यह आम्र-वृक्ष नहीं, यह किम्फल वृक्ष है, मत खाओ'

पुब्बे पन इमस्मिं रुक्खमूले मनुस्सा निवासं कप्पेत्वा अम्बफलानीति इमानि विसफलानि खादित्वा जीवितक्खयं पापुणन्ति। पुन दिवसे गामवासिनो निक्खमित्वा मतमनुस्से दिस्वा पादे गण्हित्वा पटिच्छन्नट्ठाने छेड्डेत्वा सकटेहि सद्धिं येव सब्बन्तेसं सन्तकं गहेत्वा गच्छन्ति।

ते तं दिवसम्पि अरुणुग्गमनकाले येव मय्हं बलिवद्दा भविस्सन्ति मय्हं सकटं मय्हं भण्डन्ति वेगेन तं रुक्खमूलं गन्त्वा मनुस्से निरोगे दिस्वा–कथं तुम्हे इमं रुक्खं नायं अम्बरुक्खोति जानित्थाति पुच्छिंसु। ते मयं ना जानाम सत्थावहजेट्ठको नो जानातीति आहंसु। मनुस्सा बोधिसत्तं पुच्छिंसु–पण्डित, किन्ति कत्वा त्वं इमस्स रुक्खस्स अनम्बरुक्खभावं अञ्ञासीति ? सो द्वीहि कारणेहि अञ्ञासिन्ति वत्वा इमं गाथमाह–

नायं रुक्खो दुरारूहो, नपि गामतो आरका। आकारकेन जानामि, नायं साधुफलो दुमोति ।।

तत्थ **नायं रुक्खो दुरारूहोति** अयं विसरुक्खो न दुक्खारुहो होति। उक्खिपित्वा ठपितनिस्सेणि विय सुखेन आरोहितुं सक्काति वदति। **नपि गामतो आरकाति** गामतो दूरे ठितोपि न होति गामद्वारे ठितो येवाति दीपेति। **आकारकेन जानामीति** इमिना दुविधेन कारणेनाहं इमं रुक्खं जानामि किन्ति! **नायं सादुफलो दुमोति** सचे हि अयं मधुरफलो अम्बरुक्खो अभविस्स एवं सुखारूहे अविदुरे ठिते एतस्मिं एकम्पि फलं न तिट्ठेय्य, फलखादकमनुस्सेहि निच्चं परिवुतोव अस्स। एवं अहं अत्तनो जाणेन परिच्छिन्दित्वा इमस्स विसरुक्खभावं अञ्ञासिन्ति महाजनस्स धम्मं देसेत्वा सोत्थिगमनं गतो।

सत्थापि एवं भिक्खवे! पुब्बे पण्डिता फलकुसला अहेसुन्ति इमं धम्मदेसनं आहरित्वा अनुसन्धिं घटेत्वा जातकं समोधानेसि। तदा परिसा बुद्धपरिसा अहेसुं सत्थावाहो पन अहमेवाति।

फलजातकं

●

(कह) मना किया, जिन्होंने खाये थे, उनको भी वमन करा, उन्हें चार मधुर पेय पिला स्वस्थ किया। (इससे) पहले, मनुष्य उस वृक्ष के तले निवास कर, 'यह आम्रफल है' (मान) उन विष–फलों को खा, (अपने) प्राण गँवाते। अगले दिन ग्रामवासी निकल, मृत मनुष्यों को देख, उन्हें पाँव से पकड़, छिपे हुए स्थान पर फेंक, गाड़ियों–सहित; जो कुछ उनके पास होता, सब लेकर चले जाते।

उस दिन भी उन्होंने अरुणोदय के समय ही निकल 'बैल मेरे होंगे, गाड़ी मेरी होगी, सामान मेरा होगा' (मान) शीघ्रतापूर्वक उस वृक्ष के नीचे पहुँच मनुष्यों को निरोगी देख–'तुम्हें कैसे मालूम हुआ कि यह वृक्ष आम्र–वृक्ष नहीं है ?' पूछा। उन्होंने–'हम नहीं जानते, हमारा ज्येष्ठ सार्थवाह जानता है! कहा।' मनुष्यों ने बोधिसत्त्व से पूछा– 'हे पण्डित! तूने कैसे जाना कि यह वृक्ष आम का वृक्ष नहीं है ?' दो कारणों से जाना कह, उसने यह गाथा कही–

न तो यह वृक्ष चढ़ने में दुष्कर है, न ही गाँव से दूर है। इन दो बातों से मैं जानता हूँ कि यह स्वादु फलों का वृक्ष नहीं।

नायं रुक्खो दुरारूहोति–यह विष–वृक्ष चढ़ने में दुष्कर नहीं है, उछलकर, जैसे सीढ़ी रखी हो, सहजतः चढ़ा जा सकता है। **न पि गामतो आरकाति**–ग्राम से दूर भी नहीं है, अर्थात् ग्राम के समीप ही है। **आकारकेन जानामीति**–इन दो प्रकार के कारणों से मैं इस वृक्ष को पहचानता हूँ कि **नायं साधुफलो दुमोति**–यदि यह मधुर फल आम्र–वृक्ष हो, तो इस प्रकार आसानी से चढ़ सकने योग्य (तथा) ग्राम के पास ही लगे इस (वृक्ष) पर एक भी फल न रहे। फल खानेवाले मनुष्य, इसे नित्य ही घेरे रहें। इस प्रकार मैंने अपने ज्ञान से परीक्षा करके जाना कि यह विष–वृक्ष है। इस प्रकार जन (–समूह) को धर्मोपदेश कर, उसने सकुशल मार्ग ग्रहण किया।

बुद्ध ने भी, हे भिक्षुओं! इस प्रकार पहले भी पण्डित (–जन) फल (पहचानने में) दक्ष हुए हैं' (कह) इस धर्मदेशना कह, परिणाम सामञ्जस्य से, जातक का आशय प्रस्तुत किया। उस समय की परिषद् (अब की) बुद्ध–परिषद् ही थी। लेकिन सार्थवाह मैं ही था।

फल जातक

●